अंतिम संदेश

MAKE india BETTER

“और सलामती हो उस पर जो मार्गदर्शन का पालन करे|” (२०: ४७)

प्रिय भाइयों और बहनों, हम आपकी सेवा में निर्माता की कृपा से निर्माता का संदेश एवं शिक्षाएं पहुंचा रहे हैं, आप इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ें|

निर्माता का अस्तित्व

निर्माता है या नहीं? क्या यह संसार बग़ैर किसी निर्माता के ऐसे ही निर्मित हो गया या कोई इस निर्मिती का निर्माता है?? मनुष्य इतिहास में निर्माता के अस्तित्व के प्रति विवाद बहुत ही कम हुआ है, इंसान ने हमेशा ही निर्माता के अस्तित्व को मान्य किया है, परंतु फिर भी ऐसे लोग इस संसार में पैदा हुए जिन लोगों ने निर्माता के अस्तित्व का खंडन किया, हमें विश्वास है कि जिन लोगों ने निर्माता के अस्तित्व का खंडन किया वे आंतरिक रूप से तो निर्माता के अस्तित्व को स्वीकार करते थे लेकिन बाह्य रूप से इंकार करते थे|

हमें ऐसा विश्वास क्यों है इस का कारण यह है कि मनुष्य की रचना ही ऐसे हुई है कि वह रचयिता का इंकार कर ही नहीं सकता, आप को शायद हमारी बात ग़लत लग रही हो, किंतु मनुष्य की बुध्दि यह मानने के लिए तैयार ही नहीं कि इस संसार की उत्पत्ति बग़ैर किसी निर्माता के हुई है, यदि हम आप से कहें कि जो मोबईल इस समय आप की जेब में है वह अपने आप बन गया, अर्थात उस में लगा

प्लास्टिक, कांच, तांबा, चांदी इत्यादी सब अपने आप एक दूसरे से जुड़ गए, तो आप कहेंगे आप को डॉक्टर की ज़रूरत है! आप पागल हो चुके हैं!! फिर हम आप से यही पूछना चाहेंगे कि यदि आप इस छोटे से मोबाईल की उत्पत्ति अपने आप हुई ऐसा मान ही नहीं सकते तो "यह समस्त विश्व अपने आप बन गया" अथवा "इस विश्व का कोई निर्माता नहीं है" यह कैसे मान सकते हैं??? तात्पर्य यही है कि जिस मनुष्य में थोडी भी विचार करने की क्षमता अभी बाकी है तथा उसकी बुध्दि भ्रष्ट नहीं हुई तो उसका निष्कर्ष यही होगा कि ना मोबईल अपने आप बना है, ना ही यह विश्व अपन आप बना है, बल्कि इस संसार का एक निर्माता है, जिसने समस्त विश्व का निर्माण किया है, इसीलिए हम ने कहा कि मनुष्य की रचना ही ऐसे हुई है कि वह रचयिता का इंकार कर ही नहीं सकता|

कुरआन कहता हैः

"क्या वे बग़ैर किसी निर्माता के निर्मित हो गए अथवा वे स्वयं निर्माता है|" (५२ः ३५)

मनुष्य की उपासना का रहस्य

प्रश्न यह है कि मनुष्य किस की उपासना करे? और यह कि मनुष्य किस की उपासना कर रहा है?

यदि आप पहले प्रश्न पर विचार करें तो स्वयं आप ही इस प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं, हम ने यह कहा कि समस्त विश्व का एक निर्माता है, तो एक मनुष्य को किस की उपासना करनी चाहिए?? जी हां, आप का उत्तर पूर्ण रूप से सही है कि मनुष्य को समस्त विश्व के निर्माता की ही उपासना करनी चाहिए, यह पहेली तो आप ने सुलझा दी, परंतु दूसरा प्रश्न इतना सरल नहीं है|

दूसरा प्रश्न वास्तविकता में एक चक्रव्यूह है, और जब तक आप इस चक्रव्यूह को समझने में असमर्थ होंगे तब तक आप इस प्रश्न की गुत्थी को सुलझाने में भी असमर्थ होंगे, आखिर यह चक्रव्यूह है क्या???

आप ने बड़ी आसानी से कह दिया कि मनुष्य को उसी रचयिता की उपासना करनी चाहिए जिसने समस्त संसार की रचना की, परंतु वास्तविकता में ऐसा होता नहीं है, इस का कारण यह है कि निर्माता ने इस संसार में मनुष्य के लिए आकर्षण रखा है, मनुष्य इस संसार की तरफ आकर्षित होता है, इस संसार में विरचित खान-पान और सूख-समाधान की ओर भागता है, इस प्रकार एक मनुष्य का जीवन केवल इस संसार में उपलब्ध सुख उपभोगना बन

जाता है, और वह जीवन के चक्र में फंसकर अपने निर्माता को भूल जाता है, परंतू जीवन इतना सरल नहीं है, जीवन समस्याओं का दूसरा नाम है, क्या धनी क्या फक़ीर, हर मनुष्य को जीवन में समस्याओं का सामना करना पड़ता है, हर एक की अपनी अपनी समस्याएं हैं और वह उन समस्याओं का समाधान चाहता है, अब जीवन है तो समस्याएं हैं, और समस्याएं हैं तो उन समस्यायों का समाधान तलाश करना मनुष्य के लिए अनिवार्य है, परंतु समस्यायों का समाधान है कहां???

अब यदि आप इस प्रश्न पर भी चिंतन करें तो उत्तर आप ही दे सकते हैं, इसे कुछ इस प्रकार समझिए, समस्त विश्व का एक निर्माता है, तो आप की समस्या का निर्माण किस ने किया?? बिल्कुल सही, उसी निर्माणकर्ता ने, तो आप की समस्या का समाधान कौन कर सकता है?? आप स्वयं उत्तर दे सकते हैं कि निर्माणकर्ता ही हमारी समस्या का समाधान कर सकता है,

कुरआन कहता हैः

"यदि अल्लाह तुझे कोई कष्ट देना चाहे तो इस कष्ट को उसके सिवाय कोई दूर नहीं कर सकता, और यदि वह तेरे साथ कोई भलाई करना चाहे तो वह हर चीज़ पर सक्षम है|" (६ः १७)

अब यह गणित बिल्कुल सरल है कि जीवन है तो समस्या है, और समस्या है तो इस समस्या का एक निर्माता है, जो निर्माता है वही समस्या का

समाधान कर सकता है, अंत एक मनुष्य को उसी निर्माता की भक्ति करनी चाहिए और अपनी समस्या के समाधान के लिए उसी से प्रार्थना करनी चाहिए|

परंतु मनुष्य एक दुर्बल प्राणी है, वह अपनी समस्या का समाधान तुरंत चाहता है, कभी मनुष्य को अपनी समस्या एक समयकाल तक झेलनी ही पड़ती है जिससे व्यथित होकर वह अपनी समस्या के समाधान के लिए निर्माता को छोड़कर दूसरों के द्वार खटखटाता है और यहीं से मनुष्य निर्माता की उपासना करने कि बजाए उनकी पूजा करता है जिनसे वह अपनी समस्या के समाधान की आस्था रखता है, परंतु वह यह भूल जाता है कि ऐसा करने

पर यदि उसकी समस्या समाप्त हो जाती है तो वह समस्या उसी निर्माता ने समाप्त की है जिसने उस समस्या का निर्माण किया था, उसी ने इस मनुष्य के भाग्य में यह समस्या एक प्रमुख समयकाल तक लिखी थी, उस समस्या का समय संपन्न हुआ तो निर्माता ने उस समस्या को समाप्त कर दिया, परंतु मनुष्य की आस्था अब उस पर होती है जिस के द्वार उस ने खटखटाए, और मनुष्य उस दूसरे की उपासना करता है|

कभी मनुष्य किसी लाभ की आशा करता है, फिर इस लाभ को पाने के लिए भी अपने निर्माता से आस्था रखने की बजाए दूसरे द्वार ढूंढता है, अब यदि निर्माता ने उस के भाग्य में वह लाभ लिखा है तो वह लाभ उसे ज़रूर मिलता है, परंतु मनुष्य की आस्था उस पर बैठ जाती है जिस के द्वार उसने खटखटाए|

कभी मनुष्य की समस्या का समय बाकी होता है तो मनुष्य यह विचार करता है कि इस द्वार से उस की समस्या समाप्त नहीं हुई तो वह किसी और द्वार पर जाता है, वहां समाधान नहीं हुआ तो किसी और द्वार पर और यह चक्र चलता रहता है, फिर जैसे हि उस की समस्या का समयकाल समाप्त होता है और निर्माता उस की समस्या समाप्त कर देता है, मनुष्य यह सोचता है कि उस की समस्या उसने समाप्त की जिसके द्वार पर वह सबसे अंत में आया, और फिर उसकी उपासना करना आरंभ कर देता है|

ठीक इसी प्रकार यदि उसे एक द्वार से लाभ नहीं मिलता तो वह दूसरे द्वार पर जाता है, फिर दूसरे से तीसरे, जिस समय निर्माता ने उस मनुष्य के भाग्य में जो लाभ लिखा था उसे वह लाभ देता है तो उस मनुष्य की आस्था उस द्वार पर बैठ जाती है जहां वह अंत में आया था|

यदि आप इस चक्रव्यूह को समझ गए तो आप समझ गए होंगे कि हम ने ऐसा क्यों कहा कि दूसरा प्रश्न सरल नहीं है, मनुष्य को तो निर्माता की ही उपासना करनी चाहिए परंतु उपर जो चक्र हम ने बताया उसके चलते अधिकांश लोग ऐसा कर नहीं पाते हैं|

मन की शांति

कभी आप प्रसन्न होते हैं, कभी दुखी होते हैं, क्या आप जानते हैं कि ऐसा क्यों होता है, अर्थात आप प्रसन्न क्यों होते हैं? और आप दुखी क्यों होते हैं?? इस का कारण आप का मन है, अर्थात जब आप का मन प्रसन्न होता है आप प्रसन्न होते हैं, जब आप का मन दुखी होता है आप दुखी होते हैं, एक मनुष्य अपने माता-पिता, बच्चों से प्रेम इसलिए करता है कि उसका मन उन से प्रेम करता है, आप चिंतित इसलिए होते हैं कि आप का मन चिंतित होता है, एक मनुष्य किसी से नफ़रत इसलिए करता है कि उसका मन उस व्यक्ति से नफ़रत करता है, अर्थात मनुष्य अपने अचार-विचार, चिंतन-मनन में अपने मन का अनुसरण करता है, अगर उसका मन अशांत है तो वह अशांत होगा, यदि उसका मन दुविधा में है तो वह दुविधा में होगा, एक मनुष्य बुरा कर्म इसलिए करता है कि उसके मन में वह बुरा कर्म करने की कामना होती है, एक मनुष्य चोरी, डकैती, लूटपाट इसलिए करता है कि उसके मन में शिर्घ ही ज़्यादा धन कमाने की कामना होती है|

सारांश यह कि आदमी के कर्म, भावना, विचार उस के मन के अनुयायी होते हैं, हमारी इस बात का अनुभव आप इस प्रकार लगा सकते हैं कि एक मनुष्य यदि किसी दूसरे मनुष्य से नफ़रत करता है, और आप यदि उससे उसके नफरत का कारण पूछें तो हो सकता है वह आपको इस दूसरे मनुष्य के

अवगुण बतलाएं अर्थात इन अवगुणों के कारण वह उस दूसरे मनुष्य से नफ़रत करता है, परंतु वही अवगुण उस की खुद की संतान में हों तो वह उससे नफ़रत नहीं करता बल्कि प्रेम करता है, कारण यही है कि उसका मन उसकी अपनी संतान से प्रेम करता है, अर्थात बात अवगुणों की नहीं बल्कि मन की है|

हमारा प्रश्न यह है कि मनुष्य को सुख, शांति, समाधान कब मिलता है या कब मिलेगा??? जी हां, आपका उत्तर बिल्कुल सही है कि जब मनुष्य का मन सुखी, शांत और समाधानी होगा तब मनुष्य भी सुखी, शांत और समाधानी होगा, अब यहां शायद आपके मन में दूसरा प्रश्न ज़रूर उत्पन्न हुआ होगा कि मनुष्य का मन कैसे सुखी, समाधानी होगा??

इस प्रश्न के उत्तर में हम आप से फिर पूछते हैं, क्या इस समस्त विश्व का कोई निर्माता है? उत्तर है "है" प्रश्न है, आपको किस ने निर्माण किया? उत्तर है, "उसी ने" प्रश्न है, आपके शरीर के आंतरिक व बाह्य अंगों का निर्माण किस ने किया? उत्तर है, "उसी ने" अर्थात मन जैसे अदभुत अवयव का निर्माण भी उसी ने किया, अब प्रश्न यह है कि यह अवयव अर्थात मन यदि अपने निर्माता को भूल जाए तो क्या कभी समाधानी हो सकता है??? उत्तर है, "नहीं" अर्थात मनुष्य को समाधान और शांति चाहिए तो उसके मन को समाधानी एवं शांत होना पड़ेगा, और यह तब हो सकता जब यह मन अपने

उस अकेले निर्माता का स्मरण करे जिसने उसका निर्माण किया है, उसी की उपासना करे, उसी की पूजा में विलीन हो जाए|

निर्माता ने यही संदेश कुरआन में इस प्रकार दिया हैः "ध्यान से सुनों, अल्लाह की याद से ही दिलों को संतुष्टी मिलती है|" (१३ः २८)

यही वह निर्माता का संदेश है जो हम समस्त मानवजाती को देना चाहते हैं, आपके सभी दूख, कष्ट, चिंताओं का समाधान इसी में है कि आप उस एक निर्माता को अपना उपास्य बना लें, आप को कोई लाभ चाहिए तो उसी से मांगे, किसी समस्या का समाधान चाहिए तो उसी से मांगे, विचार कीजिए
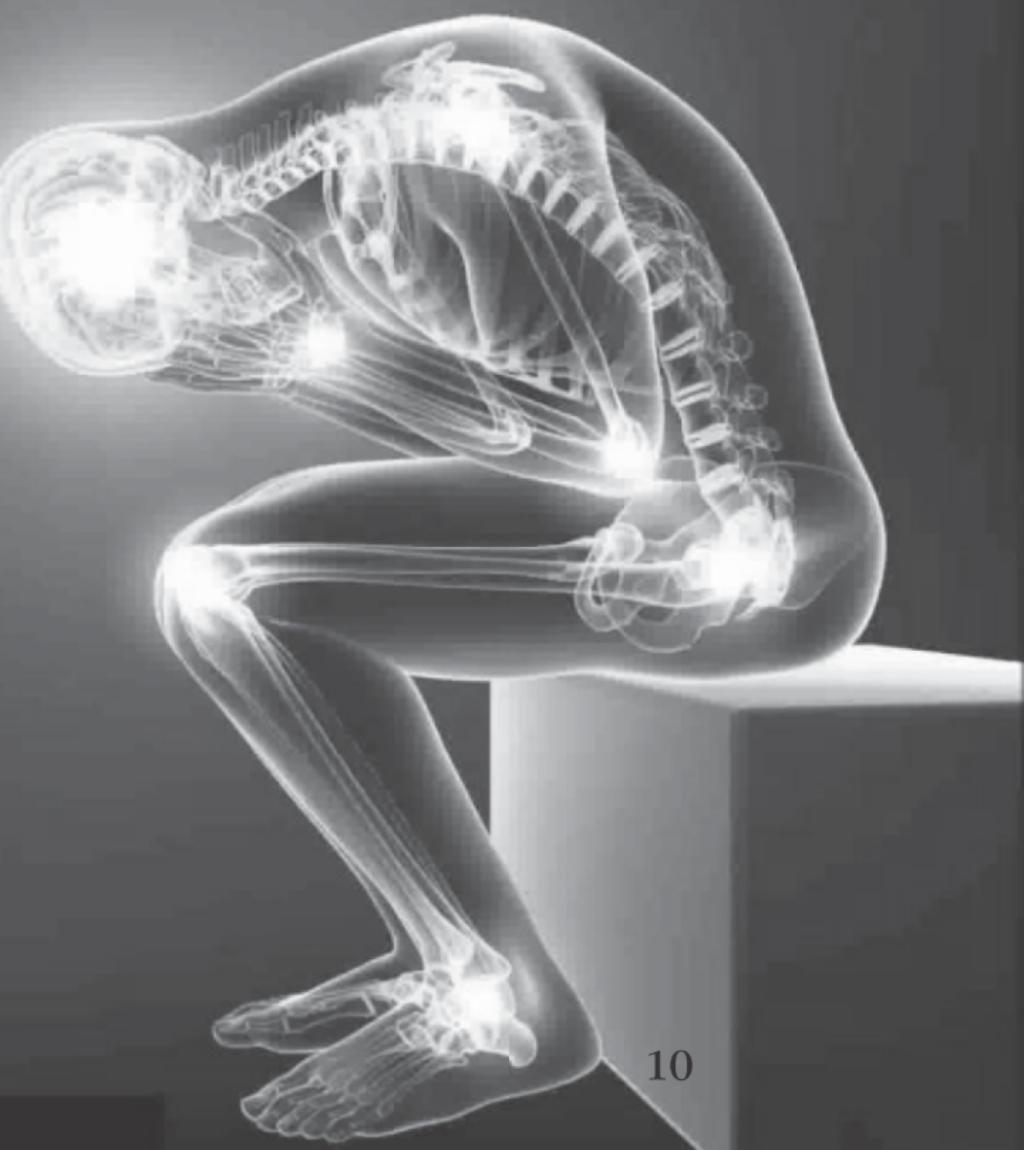
आप उसके सामने हाथ फैला रहे हैं जो सारे विश्व का स्वमी है, वह वही है जिसने सूर्य, चंद्र, धरती, आकाश, विशाल समुद्र और समस्त ब्रहमांड का निर्मा ण किया, वही है जिसने इस धरती से हमारे खाने के लिए अन्न उगाया, वही है जो आकाश से वर्षा लाता है, वही है जो रात के बाद दिन और दिन के बाद रात लाता है, वही है जो प्रत्येक पशु पक्षी को उनकी अन्न सामग्री पहुंचा रहा है, वही है जिसने शेर को घात लगाकर शिकार करना सिखाया, मधुमक्खी को फुलों का रस चूसना सिखया, वही है जिसने चींटियों को पंक्ति में चलना सिखाया, वही है जो सूर्य को समय पर निकालता है, और समय होने पर उसका अस्त भी करता है, संसार की कोई वस्तु उसके आदेश विरूध्द नहीं जा सकती, वह जिसे चाहे धन दे, जिसे चाहे फकिरी दे, उससे कोई प्रश्न नहीं कर सकता, समस्त विश्व पर उसी का वर्चस्व है, वह जो चाहे कर सकता है, कोई उसे रोक नहीं सकता, उसे प्रत्येक वस्तु का ज्ञान है, उसकी इच्छा के विपरीत एक पत्ता भी नहीं गिरता, वह जानता है मनुष्य के मन में क्या है, वह जानता है चींटि के मन मे क्या है, अंधेरे में, उजाले में कौन सी वस्तु कहां है वह जानता है, कौन सा प्राणी क्या कर रहा है वह जानता है, वही है जिसने इंसान को अन्न चबाने के लिए दांत दिएं, अन्न पचन के लिए मनुष्य के अंदर पचंनशक्ती रखी, बात करने के लिए मनुष्य को जुबान दी, वह हर एक की बोली समझता है, इन बोलियों का निर्मा ता भी वही है, वह पशु पक्षीयों की बोली भी जानता

है, क्या ऐसे स्वमी के लिए मुश्किल है कि वह आप की समस्या का समाधान ना करे, आपकी समस्या भी तो उसी ने निर्माण की हुई है, ऐसे स्वामी के सामने नमस्तक होना ही मनुष्य के जीवन का लक्ष्य है, लोग संसार में शांति पाने के लिए धन के पीछे भागते है, जब्कि बहुत से धनवान धन की प्राप्ति के बाद भी शांति नहीं पाते, उनका मन विचलित होता है, उनका जीवन चिंता से ग्रस्त होता है, कारण यही है कि इन लोगों ने अपने स्वामी को नहीं पहचाना यदि वे अपने स्वमी को पहचान लेते और उसकी उपसाना में विलीन हो जाते तो उनका मन अपार शांति को पा लेता|

संदेश वाहक और प्रेषित

यही वह संदेश है जिसे मानव तक पहुंचाने के लिए हर युग में, हर समय में, हर क्षेत्र में निर्माता की ओर से संदेश वाहक और प्रेषित आते रहें, नूह, हूद, सॉलेह, इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब, यूसुफ, मूसा (Moses), ईसा (Jesus Christ) अलैहिमुस्सलाम इन सभी ने लोगों को यही संदेश दिया, और जब मानव का जीवन अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया तो निर्माता ने अंतिम प्रेषित मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यही संदेश देकर भेजा|

कुरआान कहता हैः

"और हम ने आप (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से पहले जो भी संदेष्टा भेजा उस पर यही (सत्य) प्रकट किया कि मेरे सिवा कोई उपास्य नहीं है, इसलिए तुम सब मेरी ही उपासना करो|" (२१ः २५)

हम ने आप को बताया कि किस प्रकार मनुष्य अपने निर्माता को भूल जाता है, अंत संदेश वाहक मनुष्य को निर्माता का स्मरण कराते हैं और उसी एक की पूजा करने का आदेश देते हैं, मनुष्य यदि अपने निर्माता की उपासना करना चाहता है तो प्रश्न निर्माण होता है कि वह अपने निर्माता की उपासना कैसे करे, संदेशवाहक यही बतलाने आते हैं कि उस निर्माता की उपासना कैसे की जाए, उसकी पूजा, अराधना करने का क्या तरीका है|

संदेश वाहक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंतिम प्रेषित है, अब आपके बाद कोई प्रेषित नहीं आएगा, अर्थात इस संसार के अंत तक जो भी मनुष्य जन्म लेगा उसे आप ही के मार्गदर्शन पर चलना होगा, यही कारण है कि निर्माता ने ना केवल आप पर जो ग्रंथ अर्थात कुरआन अवतरित किया उस की रक्षा की बल्कि आप की कथनी, करनी, और आपके आदेशों की भी रक्षा की, आज भी आपका मार्गदर्शन सुरक्षित है|

ग्रंथ

मानव इतिहास में कुछ संदेष्ताओं पर निर्माता ने ग्रंथ भी अवतरित किए थे जैसे मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरेत, ईसा अलैहिस्सलाम पर इंजील इत्यादी, यह ग्रंथ इसीलिए अवतरित किए गए कि मानव जाति अपने स्वामी के मार्गदर्शन को पढ़े तथा उसके आदेशों का पालन करे, जब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को संदेष्टा बनाया गया तो आप पर भी निर्माता की ओर से ग्रंथ अवतरित किया गया, यही ग्रंथ कुरआन है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर २३ वर्ष की अवधि में अवतरित किया गया, कुरआन जैसे ही अवतरित होता उसे लिखा जाता था और मुसलमान उसे याद भी कर लेते थे, अंत कुरआन को याद करने वाले सदैव रहे हैं जिनके कारण कुरआन में परिवर्तन करना असंभव हो गया, और वह कुरआन जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित हुआ था आज भी ज्यों का त्यों मौजूद है, जो निर्माता की ओर से मानव जाति के लिए अंतिम संदेश है|

कुरआन कहता हैः

“निश्चित ही हम ही ने ज़िक्र (कुरआन) को अवतरित किया है और हम ही उसकी रक्षा करने वाले हैं|” (१५ः ९)

यहां यह बात ज़रूर याद रखनी चाहिए कि कुरआन अंतिम ग्रंथ है, और कुरआन किसी क्षेत्र, किसी प्रदेश, किसी भूभाग के लिए नहीं, किसी

विशिष्ट समूह के लिए नहीं, किसी विशिष्ट जाति के लिए नहीं, किसी विशिष्ट समयकाल के लिए नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के लिए अवतरित किया गया है, यही कारण है कि कुरआन बार बार तमाम मानव जाति को संबोधित करता है|

एक और बात विचार करने योग्य है कि कुरआन मानव जाति को जो संदेश देता है वह कोई नया संदेश नहीं बल्कि वही संदेश है जो सारे प्रेषितों ने दिया है, और वह यह कि उसी एक निर्माता कि अराधना करना चाहिए और अपने आप को उसी के समक्ष सर्मपण करना चाहिए, यदि जग का स्वमी, जग का पालनहार, प्रत्येक वस्तू का निर्माणकर्ता एक मात्र एक है तो पूजा, अराधना, उपासना भी उसी की होनी चाहिए|

कुरआन अरबी भाषा में प्रकट हुआ, उस समय अरबी भाषा के ज्ञान में अरब वासी सब से उच्च शिखर पर थे, वे अपनी भाषा और भाषा पर उनके प्रभुत्व पर गर्व करते थे, जब इन अरब वासीयों ने कुरआन को निर्माता का संदेश मानने से इंकार किया तो निर्माता ने कुरआन जैसा कोई ग्रंथ लाने का चैलेंज किया अर्थात यदि कुरआन निर्माता की ओर से नहीं आया है और मानव निर्मित है तो तुम भी मानव हो तुम भी इस प्रकार ग्रंथ विरचित कर सकते हो, परंतु वह इस चैलेंज का जवाब ना दे सके|

कुरआन कहता हैः

"आप (हे संदेश वाहक) कह दीजिए, यदि मनुष्य व जिन्न जाति एकत्र हो जाए कि इस जैसा कुरआन ले आए तो वे इस जैसा कुरआन नहीं ला सकते, यद्यपि वे (इस कार्य के लिए) एक दूसरे के सहायक बन जाए|" (२१ः २५)

जब वे पूरा ग्रंथ लाने में असमर्थ हुए तो कुरआन ने चैलेंज को आसान किया और कहा कि पूरा ग्रंथ नहीं सिर्फ कुरआन की सूरह जैसी एक सूरह (अध्याय) ही लेकर आओ, परंतु अपनी भाषा और भाषा प्रभुत्व पर गर्व करने वाले इस चैलेंज का जवाब न दे सके|

कुरआन कहता हैः

"यदि तुम इस विषय में जो हम ने हमारे बन्दे पर अवतरित किया (अर्थात कुरआन) शक में हो तो उसके जैसी एक सूरह (अध्याय) ले आओ, (इस

कार्य के लिए) अल्लाह को छोड़कर जितने तुम्हारे सहायक हैं सब को बुला लाओ यदि तुम सच्चे हो|" (२ः २३)

आप स्वयं विचार कर सकते हैं कुरआन कोई दूसरी भाषा में अवतरित नहीं हुआ था, फिर भाषा पर भी उनका प्रभुत्व था, परंतु इन सब के बावजूद वे इस चैलेंज के जवाब में विवश हो गए, वे कुरआन जैसा ग्रंथ क्या लाते वे तो कुरआन के जैसा एक अध्याय भी ला ना सके, जिससे यह सिध्द हुआ कि कुरआन उस निर्माता की ओर से अवतरित किया गया है जो जग का स्वामी और पालनहार है, और मानव जाति के लिए अंतिम संदेश है|

इस्लामी जीवन प्रणाली

इस्लाम मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन पर भी प्रभाव डालता है, निर्माता की अराधना केवल मस्जिद तक ही सीमित नहीं, बल्कि एक मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन में भी इस्लाम की छाप होती है और यह छाप यदि निर्माता को प्रसन्न करने के लिए हो तो वह भी निर्माता की अराधना बन जाती है अर्थात अपने व्यक्तिगत जीवन में यदि एक मुसलमान अपने निर्माता को खुश करने के लिए झूठ नहीं बोलता, किसी को धोखा नहीं देता, दूसरों का धन नहीं हड़पता तो यह सारी बातें निर्माता की अराधना ही है, एक मनुष्य केवल मस्जिद तक ही सदाचारी नहीं होता बल्कि उसे अपने हर कार्य में सदारचारी शिष्टाचार लागू करना पड़ता है|

पूजा, अराधाना के अतिरिक्त यदि बात कि जाए तो इस्लाम मनुष्य को एक संतुलित जीवन प्रदान करता है, मनुष्य के जीवन की धारना बहुधा असंतुलित होती है, उदहारणार्थ भाग्य पर विश्वास इस्लाम का एक अविभाज्य घटक है, एक मुसलमान को यह विश्वास रखना अनिवार्य है कि निर्माता ने उसका भाग्य लिख रखा है और उसे जीवन में वही कुछ मिलता है जो उसके भाग्य में है, यह विश्वास मनुष्य के जीवन के लिए अमृत है, यदि एक मनुष्य किसी लक्ष्य को पाने के लिए कठोर परिश्रम करता है परंतु फिर भी वह अपने लक्ष्य को नहीं पाता तो वह जीवन से उदास हो जाता है, और अधिकांश लोग इस अवस्था में आत्म हत्या कर बैठते हैं, परंतु एक मनुष्य को यदि यह विश्वास हो कि कठोर परिश्रम के पश्चात भी यह चीज़ मेरे भाग्य में नहीं थी तो यह विश्वास उसे नवजीवन देता है, ठीक यही विश्वास उसे जीवन की समस्याओं से लड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इस्लाम की शिक्षा यही है कि एक मनुष्य की समस्या कैसी भी हो परंतु वह उसके भाग्य में थी जिससे वह भाग नहीं सकता था, और समस्या से लड़ने पर, उस पर धीरज रखने पर उसे निर्माता की ओर से मृत्युपरांत जीवन में पुरस्कार मिलेगा, इस शिक्षा की वजह से जीवन की हर समस्या में वह कमज़ोर नहीं पड़ता|

प्रेषित मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक छोटे बच्चे से कहाः

“याद रखो यदि समस्त संसार के लोग तुम्हें कोई लाभ पहुंचाना चाहे तो वही लाभ पंहुचा सकते है जो अल्लाह ने तुम्हारे भाग्य में लिखा है, और यदि वे सब तुम्हें कोई क्षति पहुंचान चाहे तो वही क्षति पहुंचा सकते हैं जो तुम्हारे भाग्य में अल्लाह ने लिखी है|” (तिर्मिज़ी)

सांसारिक जीवन से संबंध समाप्त करना इस्लाम की शिक्षा नहीं, ना ही सांसारिक जीवन के कारण निर्माता को भूलना इस्लाम की शिक्षा है, इस्लाम इन दोनों को संतुलित करता है कि एक मनुष्य को अपना सांसारिक जीवन जीने के साथ

साथ निर्माता की उपासना भी करनी है, मन की कामनाओं को भी इस्लाम संतुलित करना सिखाता है वह इस प्रकार कि अच्छी कामना पूरी की जाए और बूरी कामनाओं पर अंकुश लगाया जाए, हर कामना पूरी की जाए यह इस्लाम की शिक्षा नहीं बल्कि हर कामना पूरी करना यह मन की गुलामी है, और बुरी कामनाओं पर अंकुश लगाने की शक्ति वास्तव में मनुष्य को इस गुलामी से स्वतंत्रता प्रदान करती है|

इस्लाम मनुष्य में तक़्वा तत्त्व पैदा करने पर ज़ोर देता है, तक़्वा अर्थात निर्माता की अवज्ञा से भय और निर्माता की अज्ञा का पालन करना, हर बुरा कर्म निर्माता की अवज्ञा है, अर्थात जिसके मन में तक़्वा है उसे कोई भी बुरा कर्म करते समय निर्माता का भय होगा, फिर वह किसी की हत्या नहीं करेगा, किसी की ज़मीन नहीं हथियाएगा, किसी पर अत्याचार नहीं करेगा, किसी का अधिकार नहीं छीनेगा, किसी के धन पर अनुचित कब्ज़ा नहीं करेगा, यदि संसार का हर मनुष्य यह भय रखे तो संसार से अपराध समाप्त हो जाएंगे, एक मनुष्य में यह तत्त्व जितना ज़्यादा बढ़ता है उतना वह बुरे कार्य से दूर रहता है, अर्थात इस्लाम एक मनुष्य के बुरे कर्म करने वृत्ति पर ही आघात करता है, और इस प्रकार मनुष्य के जीवन को सही दशा और दिशा देता है|

अपनी भाषा में पवित्र कुरआन की नि:शुल्क कॉपी को आर्डर करने के लिए अभी कॉल करें, यह भेंट सारे धर्म और जाति के लिए उपलब्ध है। आर्डर के लिए आप को सिर्फ अपना

१. नाम

२. मोबाइल नंबर

३. घर का पोस्टल एड्रेस

४. कुरआन की भाषा

निचे दिए गए मोबाइल नंबर पर कॉल या एस एम् एस के द्वारा भेजना है और पवित्र कुरआन आपके घर तक नि:शुल्क पहुंचाया जायेगा।

www.albirr.in

अभी कॉल करें:

Call for Mumbai

+91 8767 333555 / 9987 445522

Call for Pune

+91 9021259021 / 8484841847

Saif Apt., Gala No. 14, Near Kokan Medical,
Tanwar Nagar, Mumbra, Thane - 400 612.

Email : freequran@albirr.in